सम्पादकीय नानावती रपट से स्वात घाटी तक-एक ही सूत्र

श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली में भयंकर दंगे हुए थे। वैसे कायदे से देखा जाए तो दंगा शब्द का प्रयोग ठीक नहीं रहेगा। दंगा तब होता है जब दो समुदाय आपस में किसी मुद्दे को लेकर लड़ते हैं। दिल्ली में 1984 में जो हुआ वह दो समुदायों की लड़ाई नहीं थी। इन्दिरा गांधी को मारने के पीछे सिख नहीं थे। उनको मारने के लिए जो शक्तियां जिम्मेदार थीं शायद अभी तक भी उनका चेहरा बेनकाब नहीं हुआ है। हत्या के पीछे की शक्तियों को बेनकाब करने के लिए आयोग भी बने और उन्होंने अपनी रपटें भी दीं। लेकिन अन्ततः प्रयास यही रहे कि वे शक्तियां पर्दे के पीछे ही रहें। कुछ रपटों में शक की सुई किस ओर संकेत कर रही है, ऐसा भी लिखा गया। लेकिन सभी जानते हैं कि ऐसी शक की सुई को पकड़ने की बजाय उस पर काले पर्दे डालने का प्रयास किया।

इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद इन्हीं शक्तियों ने एक सोची समझी योजना के अन्तर्गत दिल्ली में पंजाबियों विशेषकर सिखों पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिए। उनको बेरहमी से मारा गया। जिन पर उनकी रक्षा का भार था, वे वट वृक्ष के गिरने से धरती हिलने के उदाहरण देने लगे। ऐसा नहीं कि दिल्ली में इन पैशाचिक शक्तियों का नेतृत्व कौन कर रहा था, इसे कोई जानता न हो। दिल्ली के लोग उन्हें अच्छी तरह पहचानते हैं। नानावती आयोग ने अपनी रपट में उनकी शिनाख्त और भी आसान कर दी है। लेकिन जो शक्तियां इन्दिरा गांधी को मरवाकर भारत की सत्ता अन्ततः अपने समर्थक लोगों के हाथ में केन्द्रित करना चाहती थीं वे नानावती आयोग की रपट को कूड़ेदान में ही फेंक सकती थीं। इस रपट के साथ ऐसा ही हुआ। इतना ही नहीं बल्कि कुछ लोगों को तो कांग्रेस पार्टी की ओर से लोक सभा में उतारकर पुरस्कृत करने का प्रयास भी किया गया। इन्हीं शक्तियों ने दिल्ली में हुए इस कत्लेआम को हिन्दु सिख दंगे का नाम देने का घृणित प्रयास भी किया। यह देश का सौभाग्य है कि इस साजिश को हिन्दुओं ने भी देखा और सिखों ने भी। इसीलिए इन शक्ति के चाहने पर भी ये दंगे इतिहास में हिन्दु सिख के नाम से दर्ज नहीं हो सके।

अब जब पन्द्रहवी लोक सभा के चुनाव हो रहे हैं तो यह मुद्दा एक बार फिर चर्चा में आ गया है। इसे समय का संयोग ही कहना चाहिए। कि देश की सत्ता पिछले पांच सालों से इन्दिरा गांधी की बहु और राजीव गांधी की पत्नी श्रीमती सोनिया गांधी के हाथों में ही है। पर्दे के बाहर यह भूमिका डॉ. मनमोहन सिंह निभा रहे हैं। जरूरी है कि दोनों इन्दिरा गांधी हत्या की नए सिरे से जांच करवाए और पता लगवाएं, कि हत्यारे किसके मोहरे थे। जब यह पता चल जाएगा तो दिल्ली में कत्लेआम करने वाली शक्तियां भी अपने आप पकड़ में आ जाएगी। परन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि क्या सोनिया गांधी और मनमोहन सिंह सचमुच उन शक्तियों को बेनकाब करना चाहते हैं या फिर जाने अनजाने उन्हीं रास्तों पर चल रहे हैं।

सोनिया गांधी की चुप्पी आश्चर्यजनक है लेकिन यह आश्चर्य तब समाप्त हो जाता हैं जब पाकिस्तान के तालिबान के कब्जे वाले क्षेत्र में वहां की सरकार हिन्दु और सिखों पर जजिया टेक्स लगा ही नहीं, बल्कि उसको वसूल भी रही है। भारत सरकार चुप है। शायद इसलिए क्योंकि अमेरिका कहीं न कहीं तालिबान का समर्थन कर रहा हैं। वह तालिबान में से अच्छे और बुरे तालिबान की शिनाख्त कर रहा हैं। भारत में (जिसमें पाकिस्तान और बांग्लादेश भी शामिल हैं) अमेरिका का तंत्र इस कदर गहरा हो चुका है कि न उससे इन्दिरा गांधी बच सकी, न राजीव गांधी और न ही अब स्वात घाटी में रहने वाले हिन्दु और सिख।

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री